International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(I), April - June, 2022, pp.143-148

जन्मदिन मनाओं, पूण्य कमाओं योजनाः जनसहभागिता एवं संस्कृति का अनूठा संगम

डॉ. दिनेश कुमार गहलोत*

प्रस्तावना

वर्तमान समय में लोकतंत्र शासन व्यवस्था का सर्वश्रेष्ठ प्रकार है। लोकतंत्र की सफलता के लिए जनसहभागिता एक आवश्यक शर्त है। जनसहभागिता को सुनिश्चित करने हेतु ही भारत में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण लागू किया गया। गांवों में पंचायत राज्य तथा शहरों में नगरपालिकाओं की स्थापना की गई है। 73 वें और 74 वें संविधान संशोधन द्वारा क्रमशः पंचायत राज एवं नगरपालिकाओं को संवैधानिक दर्जा दिया गया है। भारत में जनसहभागिता को सुनिश्चित करने हेतु कई प्रयास किए गए हैं। एक सौ पैत्तीस करोड़ की जनसंख्या तथा विशाल भौगोलिक क्षेत्र में केंद्रीकृत शासन संभव नहीं है। अतः जनसहभागिता द्वारा समुचित विकास का रास्ता अपनाया गया है।

हम इस आलेख में जन्मदिन मनाओ, पूण्य कमाओं योजना द्वारा जनसहभागिता और भारतीय संस्कृति की रक्षा किस प्रकार की जा सकती है। उसे समझने का प्रयास कर रहे हैं।

राजस्थान के राज्यपाल राजस्थान सरकार के सभी विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति होते हैं। कुलाधिपति के रूप में राज्यपाल ने राज्य के सभी विश्वविद्यालयों को एक गाँव गोद लेने का आदेश दिया। इसके तहत् गोद लिए गए गाँव को स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करने का उद्देश्य हैं। इसके द्वारा गाँव के सभी समुदायों के लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना अंतिम उद्देश्य हैं। इसे विश्वविद्यालय सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत शामिल किया गया है। [1] इसी को ध्यान में रखते हुए जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर (राज.) द्वारा सालावास गाँव को गोद लिया गया और आलेख के लेखक को इसका नोड़ल अधिकारी नियुक्त किया गया। [2]

सालावास जोधपुर जिले की लूणी पंचायत समिति में स्थित एक ग्राम पंचायत हैं वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार सालावास गांव में 1067 परिवार रहते हैं तथा 6592 जनसंख्या हैं। इनमें से 3399 पुरुष तथा 3193 महिलाएं हैं। सालावास का लिंगानुपात 939 है जो कि राजस्थान के लिंगानुपात (928) से अधिक हैं। सालावास में साक्षरता दर 68.45 प्रतिशत है। इसमें से पुरुष साक्षरता दर 82.31 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 53.98 प्रतिशत है। सालावास में अनुसूचित जाति के 1193 तथा अनुसूचित जनजाति के 25 लोग रहते हैं। [3] यह सभी आंकड़े 2011 की जनगणना के हैं। विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2021 में गाँव को गोद लिया गया। एक दशक की सीमित अवधि में गांव की स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन आ गया। जोधपुर शहर के निकट होने के कारण औद्योगिक क्षेत्र में विस्तार सालावास की ओर हुआ। बासनी, बोरानाडा, सांगरिया, तनावड़ा तथा मोगड़ा की ओर से औद्योगिक क्षेत्र सालावास की ओर बढ़ा। फलस्वरुप संपूर्ण क्षेत्र में फैक्ट्रियों की स्थापना होने लगी कृषि योग्य जमीनें बिकने लगी तथा बड़ी संख्या में लोग गाँव में आकर रहने लगे वर्तमान में सालावास गाँव की जनसंख्या 15 हजार से अधिक हैं।

* सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

सालावास गांव से दक्षिण की ओर सतनाथजी भाकरी की तलहटी में वर्ष 2002 में एक गौशाला स्थापित की गई। श्री सालावास गौशाला सेवा समिति के नाम से स्थापित यह गौशाला राजस्थान गौशाला अधिनियम 1960 के तहत् पंजीकृत है। वर्तमान समय में इसमें गायें हैं। [4] गौशाला का एचडीएफसी बैंक में खाता है तथा इसके संचालन हेतु एक ट्रस्ट भी बनाया गया है। लगभग 20 बीघा क्षेत्र में फैली गौशाला में गायों के रहने, विचरण करने का स्थान अलग–अलग है। गौशाला में चारा रखने हेतु दो बड़े हॉल है, एक छोटा मंदिर है तथा पक्षियों के लिए चुग्धांघर भी बनाया गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा गाँव को गोद लिए जाने के पश्चात् गाँव के समग्र विकास हेतु कई योजनाएं बनाकर ग्राम सभा में एक्शन प्लान के तहत् पारित की गई। इसमें एक योजना का संबंध गाँव की गौशाला से भी था। 8 जनवरी 2021 को गाँव को गोद लेने का आदेश प्राप्त हुआ और 25 जनवरी, 2021 को ग्राम सभा की बैठक में एक्शन प्लान पारित हुआ। 3 फरवरी, 2021 को गाँव के सरपंच ओमाराम पटेल का जन्मदिन आया। उसी दिन जन्मदिन मनाओं, पूण्य कमाओं योजना शुरू की गई।

चूंकि नोड़ल अधिकारी सालावास गाँव का ही निवासी है, इसलिए अतिशीघ्र ही यह अनुभूत कर लिया गया कि गाँव के लोगों को गौशाला की ओर किस प्रकार से आकर्षित किया जाए। गाँव के युवाओं में रेस्ट्रोरेंट में जाकर जन्मदिन मनाने अथवा डीजे संस्कृति विकसित हो रही है। शहर के निकट गाँव होने के कई लाभ हैं तो कई बुराईयाँ भी पनप जाती हैं। इसलिए उन्हें संस्कृति से जोड़ना बहुत आवश्यक है। कैसे जुड़े? यह एक बड़ी चुनौती है। गाय एक ऐसा पशु है जिसकी चाहे कितनी भी आर्थिक उपयोगिता हो लेकिन उसका धार्मिक महत्व भी है। गाँवों में प्रायः सभी गाय रखते हैं। दान–पूण्य भारतीय परम्परा है और गौवंश की रक्षा हेतु अपनी जान की बाजी लगाने वालों का राजस्थान में लंबा इतिहास है। गौरक्षा हमारे यहाँ आस्था का भी प्रतीक हैं।

हमारे यहाँ बछबारस को गाय और बछड़े की पूजा की जाती है। दिवाली के दूसरे दिन रामा श्यामा को गोवर्धन पूजा के दौरान गाय के गोबर की पूजा की जाती है। गाय के गोबर के कण्ड़ो पर घी, तिल, चावल अथवा शक्कर डालकर हवन किए जाते हैं।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए 3 फरवरी, 2021 को गौशाला में जन्मदिन मनाओं, पूण्य कमाओ योजना शुरू की गई। योजना के उद्देश्यों को निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है–

- ग्रामीणों में गौशाला के प्रति जागरूकता का विकास करना।
- जन्मदिन जैसे अवसरों को संस्कृति से जोड़ना।
- जीवों के प्रति दया, प्रेम का भाव विकसित करना।
- गौशाला में गायों के लिए चारे पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करना।
- ग्रामीणों में सरकारी योजनाओं का प्रचार प्रसार करना।
- ग्रामीणों को विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों से परिचित कराना तथा विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं ग्रामीणों में अंर्तक्रिया को बढ़ाना।
- गाँव में विकास हेतु जनसहयोग का भाव विकसित करना तथा इस हेतु उन्हें मानसिक रूप से तैयार करना।
- शासन में जनसहभागिता को सुनिश्चित करना।

क्या है योजना – ग्रामीणों को गौशाला में अपना जन्मदिन मनाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से यह योजना तैयार की गई। संपूर्ण योजना को निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता है –

- सर्वप्रथम गौशाला में जन्मदिन मनाने की इच्छूक व्यक्ति को अपना पंजीकरण करवाना होता है। पंजीकरण प्रपत्र में नाम, पता, मोबाइल नंबर तथा जन्मतिथि की जानकारी देनी होती है। प्रपत्र गौशाला अथवा सालावास स्मार्ट विलेज – जेएनवीयू जोधपुर के फेसबुक पेज से प्राप्त किया जा सकता है।

- औपचारिक पंजीकरण होने से सभी की माहवार सूची बना ली जाती है। जन्मदिन से एक दिन पूर्व नोड़ल अधिकारी संबंधित व्यक्ति को फोन करके परिवार, मित्र मंडली सहित आमंत्रित करता है। जन्मदिन मनाने का समय भी उनकी इच्छानुसार तय कर लिया जाता है।
- नोड़ल अधिकारी और गौशाला प्रबंधन द्वारा गाँव के सरपंच तथा मौजिल लोगों को भी कार्यक्रम में आमंत्रित किया जाता है।
- इच्छुक व्यक्ति द्वारा अपने जन्मदिन पर गौशाला में ग्रामीणों की उपस्थिति में घेवर का केक काटा जाता है। इससे पूर्व माला और साफा (महिला होने की स्थिति में शॉल) से स्वागत किया जाता है और गौशाला में जन्मदिन मनाने हेतु उनके लिए आभार हेतु उन्हें एक स्मृति चिन्ह प्रदान किया जाता है।
- यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 60 वर्ष से ऊपर के व्यक्ति द्वारा जन्मदिन मनाने जाने पर ढ़ोल थाली से भी स्वागत किया जाता है।
- कार्यक्रम में भाग लेने वालों के लिए चाय–नाश्ते की व्यवस्था भी की जाती हैं।
- जन्मदिन मनाने वाले व्यक्ति से न्यूनतम 5100/– रुपये नकद अथवा सामग्री गौशाला में भेंट करने की अपेक्षा की जाती है।

3 फरवरी, 2021 को शुरू इस योजना से गौशाला की दशा ही बदल गई है। इसके परिणाम अत्यंत सकारात्मक रहे हैं। योजना के अंतर्गत अब तक लगभग 65 लोगों ने जन्मदिन गौशाला मनाकर राशि भेंट की हैं।

योजना की सफलता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि योजना की खुशबू आसपास क्षेत्रों में भी फैल रही है और गाँव के बाहर से आकर भी लोग गौशाला में जन्मदिन मनाने लगे हैं। 65 में से 16 लोग ऐसे हैं जो सालावास गाँव में निवास नहीं करते हैं। जो कि कुल का लगभग 25 प्रतिशत हैं।

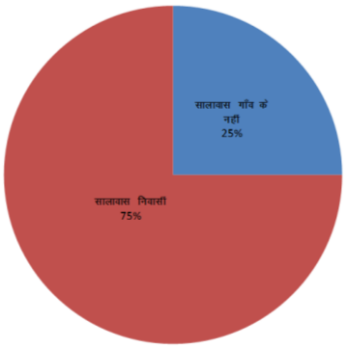

इन 65 में से 13 महिलाएं हैं जो इस बात का प्रमाण हैं कि गाँवों में सामाजिक स्थितियाँ परिवर्तित हो रही है। गाँवों में परंपरागत रूप से महिलाएं चाहे वे बेटी के रूप में हो या बहू के रूप में, घर की चार दीवारी में रहती हैं। गौशाला में आकर जन्मदिन मनाने से कई बंधन टूटने लगे हैं। 13 महिलाओं का जन्मदिन मनाना कुल का 20 प्रतिशत हैं।

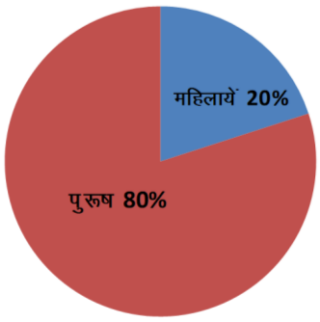

इन 13 महिलाओं में से तीन ऐसी महिलाएं हैं जो गाँव की बहुयें हैं। यह कुल महिलाओं का लगभग 25 प्रतिशत हैं। बहुओं द्वारा गौशाला में आकर जन्मदिन मनाने से गाँव में बदलते सामाजिक परिवर्तन का संकेत दिया है।

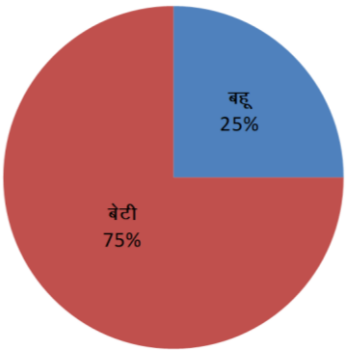

गौशाला में जन्मदिन मनाने की योजना के लोकप्रिय हो जाने पर कई ग्रामीणों ने अपनी विवाह वर्षगांठ भी इस योजना के अंतर्गत मनाई। अब तक नौं जोड़ों ने अपनी विवाह वर्षगांठ इस योजना के तहत् मनाकर लगभग अस्सी हजार की राशि गौशाला में भेंट की है।

इस संदर्भ में एक उल्लेखनीय बात यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा गाँव को गोद लिए जाने के पश्चात् आये परिवर्तनों के संदर्भ में एक सर्वेक्षण करवाया गया है। यह सर्वेक्षण 6 मार्च, 2022 को करवाया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों द्वारा यह सर्वेक्षण करवाया गया। [4] इसमें ग्रामीणों को पाँच प्रश्नों की प्रश्नावली दी गई। इसमें 209 उत्तरदाताओं ने भाग लिया। पाँच में से दो प्रश्न गौशाला के संदर्भ में थे। एक प्रश्न यह था कि जन्मदिन मनाओं, पूण्य कमाओं का संबंध किससे है? उत्तर इस प्रकार से था।

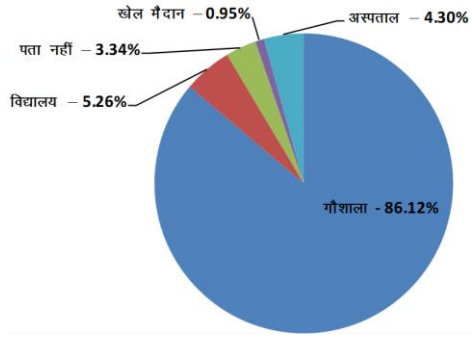

209 उत्तरदाताओं में से 180 उत्तरदाताओं ने जवाब दिया कि इस योजना का संबंध गौशाला से है। इसका सीधा तात्पर्य है कि ग्रामीणों में इस योजना के संदर्भ में जानकारी है। दूसरा प्रश्न यह था कि इस योजना की शुरुआत किसके जन्मदिन से हुई तो जवाब बड़े रोचक थे –

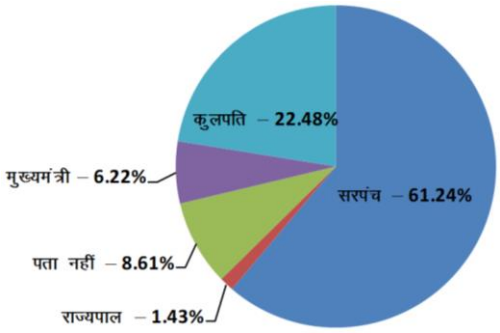

इस प्रश्न का 61.24 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जवाब सरपंच दिया जो कि सही है। लेकिन 22.48 प्रतिशत उत्तरदाताओं का जवाब कुलपति भी था। पता नहीं जवाब देने वालों की संख्या इस बार 08.61 प्रतिशत थी। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीणों ने योजना की जानकारी तो पर्याप्त है लेकिन किसके जन्मदिन से इसकी शुरुआत हुई, इसकी जानकारी अपेक्षाकृत कम हैं।

समस्या – जन्मदिन मनाओं, पूण्य कमाओं योजना एक बहुत नवाचार हैं।

इसके द्वारा गाँवों में विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत ग्रामीणों की सहभागिता सुनिश्चित की जा सकती है साथ ही युवा पीढ़ी में विकसित होता भौतिकतावाद को कम कर उन्हें भारतीय संस्कृति की ओर भी मोड़ा जा सकता है। यह योजना गौशाला में महज आर्थिक सहयोग तक ही सीमित नहीं है बल्कि इससे सामाजिक सुधारों को भी सुनिश्चित किया जा सकता है। महिलाओं के जन्मदिन मनाना, बहुओं के जन्मदिन मनाना अथवा समाज के निम्न तबके द्वारा गौशाला में आकर जन्मदिन मनाने, एक साथ जाजम पर बैठने इत्यादि से समाज की परंपरागत मानसिकता में बदलाव आयेगा। लेकिन इस संदर्भ में निम्न समस्यायें भी अनुभूत की गई हैं, जो कि निम्न हैं –

- प्रत्येक जन्मदिन पर औसतन 1200/1300 रूपये का खर्चा आता है। इसे कौन वहन करें? ख्सालावास के संदर्भ में घेवर, स्मृति चिन्ह, साफा, माला, नाश्ते का खर्चा नोड़ल अधिकारी तथा चाय का खर्चा गौशाला वहन करती हैं,
- प्रत्येक जन्मदिन पर जन्मदिन मनाने वाला व्यक्ति नोड़ल अधिकारी की उपस्थिति की अपेक्षा करता है। जो हमेशा संभव नहीं हो पाती है।
- जन्मदिन मनाने वाला व्यक्ति समाचारपत्र में खबर की अपेक्षा रखता है जो प्रत्येक बार अनेक कारणों से संभव नहीं हो पाती है। ख्सालावास गौशाला की अधिकांश खबरों को विभिन्न समाचार पत्रों में समुचित स्थान मिला है,

जन्मदिन मनाओं, पूण्य कमाओं जैसी योजना शासन में जनसहभागिता को सुनिश्चित करने का मार्ग प्रशस्त करती हैं साथ ही भौतिकतावाद के स्थान पर भारतीय संस्कृति के अनुकूल दया, प्रेम, दान का भाव भी विकसित करती है। योजना एक नवाचार है और इसे सभी गौशालाओं हेतु लागू किया जाना चाहिए। इस संदर्भ में निम्न सुझाव है –

- राज्य सरकार द्वारा इस योजना को ग्रहण कर लेना चाहिए।
- गाँवों में स्थित गौशालाओं की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत तथा शहरी क्षेत्र में नगरपालिकाओं को दी जानी चाहिए।
- गौशाला में जन्मदिन मनाने वाले को स्थानीय निकायों द्वारा सम्मानित किया जाना चाहिए। इस हेतु अलग से बजट की व्यवस्था हो। सालावास के अनुभव को देखते हुए प्रत्येक जन्मदिन हेतु लगभग 1500/– की राशि आवंटित की जानी चाहिए।
- एक वर्ष में सौं से अधिक जन्मदिन मनाने वाली गौशालाओं को राज्य स्तर पर सम्मानित किया जाना चाहिए।

जन्मदिन मनाओं, पूण्य कमाओं जैसी योजना को लोकप्रिय बनाने में समाचार पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। जन्मदिन मनाने वालों की लगातार छपती खबरों ने अन्य लोगों को इस हेतु प्रेरित किया। राजस्थान पत्रिका के गजेंद्रसिंह दहिया तथा दैनिक नवज्योति के डॉक्टर विनोद दवे ने इस योजना को पवित्र कार्य मानते हुए लगातार समाचार पत्रों में इसे स्थान दिया। [5]

- योजना के संपूर्ण प्रचार प्रसार हेतु समाचार पत्रों में विज्ञापन दिया जाना चाहिए। सालावास में इस योजना के क्रियान्वयन के दौरान जागरूकता की कमी को अनुभूत किया गया। सालावास में इसके प्रचार प्रसार हेतु समाचार पत्रों के साथ योजना की संपूर्ण जानकारी देने वाले पेम्पलेट बांटे गए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पत्र क्रंमाक : F.38(1)(12)RB/TWC/SV/2020/4825 दिनांक : 29 दिसम्बर, 2020
2. JNVU/Dev/21/2458 दिनांक : 08 जनवरी, 2021
3- www.census2011.co.in
4. राजस्थान पत्रिका, जोधपुर, 04 फरवरी, 2022
5. दैनिक नवज्योति, जोधपुर संस्करण, 07 मार्च, 2021, पृष्ठ संख्या – 10

❖◆❖